अलंकार

नियमानुसार स्वरों के चलन को अलंकार कहते हैं। अलंकार में कई कड़ियाँ होती हैं जो आपस में एक दूसरे से जुड़ी होती हैं। प्रत्येक अलंकार में मध्य सा से तार सा तक आरोही वर्ण और तार सा से मध्य सा तक अवरोही वर्ण हुआ करता है। संगीत दर्पण में अलंकार की परिभाषा इस प्रकार दी गई है :-

"विशिष्ट वर्ण सन्दर्भमलंकार प्रयक्षते"

अर्थात् नियमित वर्ण समूह को अलंकार कहते हैं। अलंकार का आरोह-अवरोह ठीक उलटा होता है। नीचे कुछ उदाहरण देखिये–

(1) आरोह – सा सा, रे रे, ग ग, म म, प प, ध ध, नि नि सां सां।
अवरोह – सा सां, नि नि, ध ध, प प, म म, ग ग, रे रे, सासा ।।

(2) आरोह – सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसां।
अवरोह – सांनिध, निधप, धपम, पमग, मगरे, गरे सा ।।

(3) आरोह – सारे सारे ग, रेग रेग म, गम गम प, मप मप ध पध पध नि, धनि धनि सां।
अवरोह – सांनि सानि ध, निध निध प, धप धप म, पम पम ग, मग मग रे, गरे गरे सा ।।

(4) आरोह – सारेगम, रेगमप, गमपध, मपधनि, पधनिसां।
अवरोह – सांनिधप, निधपम, धपमग, पमगरे, मगरेसा ।।

(5) आरोह – सागरेसा, रेमगरे, गपमग, मधपम, पनिधप धसां निध।
अवरोह – सांधनिसां, निपधनि, धमपध, प गमप, मरेगम गसारेग, रेनिसारे ।।

इस प्रकार अनेक अलंकारों की रचना हो सकती है। अलंकार को पलटा भी कहते हैं। वाद्य के विद्यार्थियों को नित्य प्रति अलंकार का अभ्यास करना चाहिए। इससे विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रवृति को प्रोत्साहन मिलता है और अंगुलिया अपने वाद्य पर विभिन्न प्रकार से घूमने योग्य हो जाती हैं। गायन में भी इसका कुछ कम महत्त्व नहीं हैं। कुछ गायकों का विचार है कि प्रारम्भिक विद्यार्थियों को अलंकार का अभ्यास खूब करना चाहिए। किन्तु कुछ गायक इसका विरोध करते हैं। उनका मानना है कि अलंकारों का अधिक अभ्यास कराने से कण्ठ में ऐसे दोष भी आ जाते हैं जो जीवन भर बने रहते हैं और लाख हटाने पर भी नहीं हटते हैं।

प्रश्न 1 : अलंकार किसे कहते हैं ?
प्रश्न 2 : अलंकार की क्या विशेषता है ?
प्रश्न 3 : अलंकार का अभ्यास क्यों आवश्यक है ?
प्रश्न 4 : चार अलंकार का परिचय दें।
प्रश्न 5 : अलंकार बनाने के क्या नियम हैं ?